**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 10, October - 2022 Publication Date: 31/10/2022

DOIs:10.2018/SS/202210003 --:-- Research Article

# "रोज़गार के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी"

**डॉ. दिनेशकुमार उ. राठोड**
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),
शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, वंथली (सोरठ)। ज़िला: जूनागढ़ (गुजरात), (भारत)।
Email – dineshrathod82@gmail.com

**सारांश:** बदलते परिवेश में हिन्दी भाषा से संबंधित रोज़गार के विभिन्न क्षेत्र उपलब्ध हैं। लेकिन सही जानकारी के अभाव में कई मर्तबा छात्र गलत धारणाओं के शिकार बन जाते हैं और यह मान बैठते हैं, कि हिन्दी में रोज़गार के अवसर नहीं! अत: हिन्दी के प्रति उदासिन उन तमाम छात्र-छात्राओं में नये उत्साह का संचार करते हुए उन्हें हिन्दी भाषा से संबंधित रोज़गार के प्रति जागरुक करने का विनम्र प्रयास है। आज भारत में लगभग ५५ करोड़ लोग हिन्दी बोलते व समझते हैं तथा वैश्विक स्तर पर करीब ७० करोड़ लोग हिन्दी के ज्ञाता है। अत: यह हिन्दी का बहुत बड़ा बाज़ार है, जहाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से हिन्दी रोज़गार के अनंत अवसर जुड़े हैं।

**मुख्य शब्द:** हिन्दी भाषा, छात्रों की उदासिनता, रोज़गार के विभिन्न क्षेत्र, उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ।

## 1. प्रस्तावना:

"प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि जत्न।
राज काज दरबार में, फैलावहु यह रत्न॥"[१]

उपर्युक्त के दोहे में निहित भारतेन्दु जी की उम्मीद पर विचार-विमर्श करें तो पीछले एक दशक में गुजरात समेत देश के कईं क्षेत्रों के महाविद्यालयों में हिन्दी विषय-चुनाव को लेकर छात्र-छात्राओं में एक क़िस्म की उदासीनता नज़र आई है। अतः इस बेरुखी के पीछे की वजह जानने की चेष्टा करते हुए मैंने कुछ छात्रों से साक्षात्कार करते हुए उन से पूछा-कि आप लोग प्रमुख या मुख्य विषय के रुप में हिन्दी को चुनने से क्यों कतराते हैं? प्रत्युतर के रुप में जो तथ्य सामने आये हैं, वे वाकई चौंका देनेवाले हैं। उन्होंने जो कुछ बताया उसका निचोड़ यह था, कि हिन्दी में रोज़गार कहाँ उपलब्ध होता है!? फिर हिन्दी पढ़कर क्या करेंगे? खैर....

## 2. अध्ययन के उद्देश्य:

छात्र-छात्राओं के मनो-मस्तिष्क पर व्याप्त निराशा दूर हों तथा हिन्दी अध्ययन-अध्यापन को लेकर अध्येताओं में विशेष उत्साह का संचार हों।

## 3. शोध प्रविधि:

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है और इसके लिए साक्षात्कार के माध्यम से सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

## 4. रोज़गार के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी:

दरअसल, प्रस्तुत शोध-आलेख प्रत्युतर के रुप में उन तमाम दिग्भ्रमित छात्र-छात्राओं का उचित पथ-प्रदर्शन या दिशा-निर्देश करने का एक विनम्र प्रयास है, जो मानते हैं कि हिन्दी में रोज़गार की संभावनाएँ नहीं! हिन्दी में रोज़गार के अपार अवसर हैं। मैं यह कहूँ तो ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं है। चूँकि वर्तमान समय सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है। अतः जब कोई नावीन्यपूर्ण खोज या अनुसंधान पृथ्वी के किसी एक भू-भाग में होती है या होता है तब उस जानकारी को पृथ्वी के अन्य भू-भागों में स्थित विभिन्न जन-समुदायों तक पहुँचाने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम के रुप में अपनी भूमिका अदा करती है इसमें कोई संदेह नहीं। भारत जैसे देश में यह काम हिन्दी के ज़रिये बड़ी आसानी से सफलता पूर्वक सम्पन्न किया जा सकता है। क्योंकि, आज समस्त भारतवर्ष में अनुमानित लगभग ५५ करोड़ से भी ज्यादा लोग हिंदी बोलते हैं और वैश्विक स्तर पर लगभग ७० करोड़ से भी ज्यादा!

बहरहाल....जब कोई कंपनी अपने उत्पाद की बिक्री बढ़ाने हेतु तत्संबंधी जानकारी बड़े पैमाने पर विशाल जनसमूह तक पहुँचाना चाहे तब सार्थक संप्रेषण के लिए यह संदेश लोगों की अपनी भाषा में हों, यह न केवल आवश्यक है बल्कि अनिवार्य भी

प्रतीत होता है। ऐसे अनेकविध व्यवसायों व सेवाओं की समस्त प्रक्रिया में लोगों को जोड़ने हेतु हिन्दी भाषा असरकारक माध्यम के रुप में आवश्यक प्रतीत होती है। फलतः इन क्षेत्रों में अनुवाद अधिकारीयों की भी आवश्यकता रहती है। इस लिहाज़ से यह भी एक बहुत बड़ा हिन्दी रोज़गार से संबंधित क्षेत्र बन जाता है। इसके अतिरिक्त बैंकों, न्यायालयों, विधानसभा गृहों, विधान परिषदों जैसे अनगिनत विभागों में कनिष्क एवं वरिष्ठ हिन्दी अनुवाद अधिकारीयों के पदों पर नियुक्तियाँ मिल सकती हैं। इसके लिए ज़रुरी शैक्षिक-योग्यता स्नातक के पश्चात One Year PG Deploma in Translation का पाठ्यक्रम भारतीय अनुवाद परिषद, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली या भारतीय विद्या भवन, पंडिता रमाबाई मार्ग, चौपाटी, मुंबई जैसे संस्थानों से अर्जित कर सकते हैं। कईं क्षेत्रिय भाषाओं में लिखी गईं उच्च कोटि की प्रसिद्ध रचनाओं का अनुवाद कर के भी अर्थोपार्जन प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा ठेठ गाँवों के पीछड़े इलाकों में बरसों से संगृहित आयुर्वेद व जड़ी-बुटियों से उपचार संबंधी ज्ञान व जानकारी का हिन्दी भाषा में अनुवाद कर के भी रोज़गार पाया जा सकता है।

अगर आप के पास एकाधिक भाषाओं का ज्ञान हैं तो बड़े-बड़े नेताओं की सभाओं में आप दुभाषियें का काम भी आसानी से पा सकते हैं। हमारें कईं राष्ट्रीय नेता जब दक्षिण भारत का दौरा करते हैं तो वहाँ की क्षेत्रिय भाषा से अवगत नहीं होते। अतः वे हिन्दी का ही अधिकतर प्रयोग करते हैं। उन्हें ऐसे मौकों पर हिन्दी के साथ-साथ क्षेत्रिय भाषा के ज्ञाता की आवश्यकता रहती है। या फिर कभी कोई विदेशी नेता भारतीय दौरे पर हों तब उन्हें भी संप्रेषण हेतु अंग्रेजी के साथ हिन्दी के ज्ञाता की ज़रुरत रहती है जिसके माध्यम से वे अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। अंग्रेजी में इसके लिए 'Interpreter' शब्द का इस्तेमाल होता है। इस तरह अनुवाद भी हिन्दी रोज़गार का एक सशक्त माध्यम बनकर उभर आया है।

अगर हिन्दी भाषा पर आपकी असाधारण पक्कड़ व रुचि है तो प्रेस व इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया के क्षेत्र में आज विशाल फलक पर रोज़गार उपलब्ध है। अगर आप प्रेस मीडिया में हिन्दी संवाददाता, संपादक, पत्रकार इत्यादी का काम पाना चाहते हैं या फिर इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया के क्षेत्र में हिन्दी रिपोर्टर, समाचार-वाचक जैसे पदों पर काम करना चाहते हैं तो स्नातक के पश्चात दो साल का जर्नालिज़्म का पाठ्यक्रम पूर्ण कर नियुक्ति पा सकते हैं। फिचर-लेखन भी इसी से संबद्ध रोज़गार का एक कम परिचित क्षेत्र है। बदलते परिवेश में आकाशवाणी, रेडियो मिर्ची, एफ.एम., टॉप एफ.एम. समेत अनेक रेडियो स्टेशन बढ़ रहे हैं। उन तमाम जगहों पर रेडियो उद्घोषक या रेडियो जॉकी के नये पद भी निर्मित हो रहे हैं। अतः हिन्दी रोज़गार का यह भी एक प्रसिद्धिपूर्ण क्षेत्र अर्थोपार्जन हेतु आप चुन सकते हैं। इसके अलावा बड़े पैमाने पर आयोजित कार्यक्रमों के संचालन में बतौर हिन्दी उद्घोषक आप अपना रोज़गार हाँसिल कर सकते हैं। हिन्दी कवि सम्मेलनों का आयोजन करके भी अर्थोपार्जन किया जा सकता है।

मनोरंजन के क्षेत्र में दृष्टिपात करें तो आज हर घर में टेलिविज़न है और हर शहर में सिनेमा घर है। इन दोनों क्षेत्रों से संबंधित हिन्दी धारावाहिकों व हिन्दी फिल्मों के निर्माण में संवाद-लेखन, पटकथा-लेखन, गीत-लेखन जैसे अनेकानेक कार्यों के लिए काबिल भाषाविदों की आवश्यकता थी, है और रहेगी। इसके अलावा अगर आप का गला सुरिला है तो हिन्दी गाना गाइये और करोड़ो कमाइये! डबिंग भी मनोरंजन की दुनिया से जुड़ा हुआ ही एक पहलू है। जहाँ पात्रों के लिप मुवमेंट के आधार पर आप शब्द-चयन करके लक्ष्य भाषा में अनुवाद कर अपेक्षित सफलता पा सकते है, दक्षिण की फिल्में 'बाहुबली', 'मगधीरा' आदि इस बात के ज्वलंत उदाहरण हैं।

हिन्दी से जुड़ा हुआ समय के साथ कदम से कदम मिलाकर विकसित अवस्था में पहुँचा हुआ एक सशक्त क्षेत्र है विज्ञापन। इसकी अपनी एक अलग दुनिया है, अपनी एक अलग भाषा है। अतः इसकी भाषा से आप अवगत हैं और आप में हूनर है तो इस क्षेत्र में रोज़गार की अनंत संभावनाएँ हैं। आज भी कोई पूछता है "ठंडा मतलब..."[२] ज़हन में तुरंत आता है...."कॉकाकोला"[३]! नहीं तो ठंडी तो बर्फ भी होती है। लेकिन विज्ञापन की भाषा ने हमारे दिमाग को घेरा है । जैसे 'TATA SKY' का विज्ञापन "इसको लगा डाला तो लाइफ जिंगालाला"[४] । इस प्रकार रोज़गार का एक क्षेत्र यह भी है जहाँ हिन्दी के ज़रिए आप अच्छी कमाई कर सकते हैं।

क्षति-शोधन (Proof Reading) भी हिन्दी रोज़गार से स्वयं अनुबद्ध एक सफल व चर्चित क्षेत्र है। अगर हिन्दी भाषा पर आपका असाधारण प्रभुत्व है तो विद्यावाचस्पति(Ph.D.) जैसी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध, समाचार-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं आदि में क्षति-शोधन या प्रूफ रीडिंग का कार्य करके अर्थोपार्जन किया जा सकता है।

आज-कल प्रवास-पर्यटन का व्यवसाय खूब फला-फूला है। केंद्रीय सरकार एवं अधिकतर राज्यों की सरकारें भी इस दिशा में कार्यान्वित हैं ऐसे में अगर आप किसी भू-भाग की विशेषताओं से परिचित हैं तथा एकाधिक भाषाओं का ज्ञान रखते हैं तो प्रवास-पर्यटन मार्गदर्शक के रुप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। अतः यह भी हिन्दी-रोज़गार से जुड़ा हुआ एक सफल क्षेत्र है।

शिक्षा संबंधी अध्ययन-अध्यापन कार्य में अगर आप विशेष रुचि रखते हैं तो हिन्दी स्नातकीय शिक्षा के पश्चात बी.एड. का प्रशिक्षण ग्रहण कर CTET की परीक्षा उतीर्ण करके बतौर PRT Teacher या TGT Teacher आप 'केंद्रीय विद्यालय', 'जवाहर नवोदय विद्यालय' इत्यादि में सरकारी नौकरी पा सकते हैं। इसके साथ अगर आप अनुस्नातक की उपाधि अर्जित कर लेते हैं तो आप PGT Teacher बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यावचस्पति की उपाधि अर्जित कर आप राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) या प्रांतीय पात्रता परीक्षा(SET) उतीर्ण कर जाते हैं तो महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में बतौर हिन्दी अध्यापक नौकरी पा सकते हैं।

## 5. निष्कर्ष:

संक्षेप में, हिन्दी में रोज़गार की अनंत संभावनाएँ हैं। अतः हिन्दी की मुख्य धारा में गोते लगाने वाले छात्र-छात्राओं को किसी भी मोड़ पर हताश, निराश या नासिपास होने की कोई ज़रुरत नहीं है। चूँकि, आनेवाले दिनों में 'नई शिक्षा नीति' के तहत हिन्दी में रोज़गार के और भी नये अवसर सामने आयेंगे इसमें कोई दो राय नज़र नहीं आती। और शायद अब हमें प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही अर्जित करनेवाली बात भी समझ में आ रही है। इसी बात की ओर इंगित करते हुए हिन्दी के प्रचार हेतु उपस्थित बलिया की एक सभा में आधुनिक युग के सशक्त कवि एवं साहित्यकार बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥"[५]

कहते हैं, संवेदना की सार्थक अभिव्यक्ति अपनी भाषा में ही हो सकती है। भारतवर्ष का बृहद जनसमुदाय हिन्दी का ज्ञाता है। अतः इसमें कोई आशंका नहीं कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है।

## सन्दर्भ सूची:

१. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, 'निजभाषा उन्नति' कविता से उद्धृत दोहा, यु.पी.बॉर्ड, कक्षा-७, हिन्दी किताब 'मंजरी', पाठ-५।
२. टेलिविज़न पर प्रसारित Coca Cola के विज्ञापन से।
३. टेलिविज़न पर प्रसारित Coca Cola के विज्ञापन से।
४. टेलिविज़न पर प्रसारित TATA Sky के विज्ञापन से।
५. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, 'निजभाषा उन्नति' कविता से उद्धृत दोहा, यु.पी.बॉर्ड, कक्षा-७, हिन्दी किताब 'मंजरी', पाठ-५।